

बात समझ में आई...

कविता



दादी डांट लगा रही
व उल्लू, व कूड़े तुम
बाबा मेरे समझते मुझे
व ऐसे दोड़े तुम।



दादी डांटे, बाबा डांटे
भीया व भी खला दिया।
दोड़ी ~ दोड़ी आई मां
सीबि से मुझे लगा लिया।

पलकें मां की भीगी थीं
आंख मेरी भी भर आई
मां के पैसे ना पूजा कोई
बात समझ में आई।

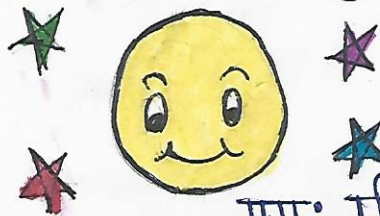
मैं दौड़ रही थी आंगन में
लेकर एक खिलौना।
बाबा बैठे, दादी बैठी
लेकर एक बिछौना।
मां मेरी बैठी आंगन में
था वो एक छोटा - सा कौना।



मां मुझे अपलक निहार रही
बुस्काकर देती बया खिलौना।
आंगन में मैं फिसल गई
आया बहुत ही रोना।



ओ मेरी राजकुमारी
ओ मेरी गुड़िया प्यारी
तुझे चोट तो व आई
बात है ओ दुबारी।



नाम:- प्रीती Pareeti